विद्या- भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

नीतू कुमारी ,विषय- हिंदी, वर्ग-तृतीय दिनांक-04-09-2021

एन.सी.ईआर.टी पर आधारित

सुप्रभात बच्चों,

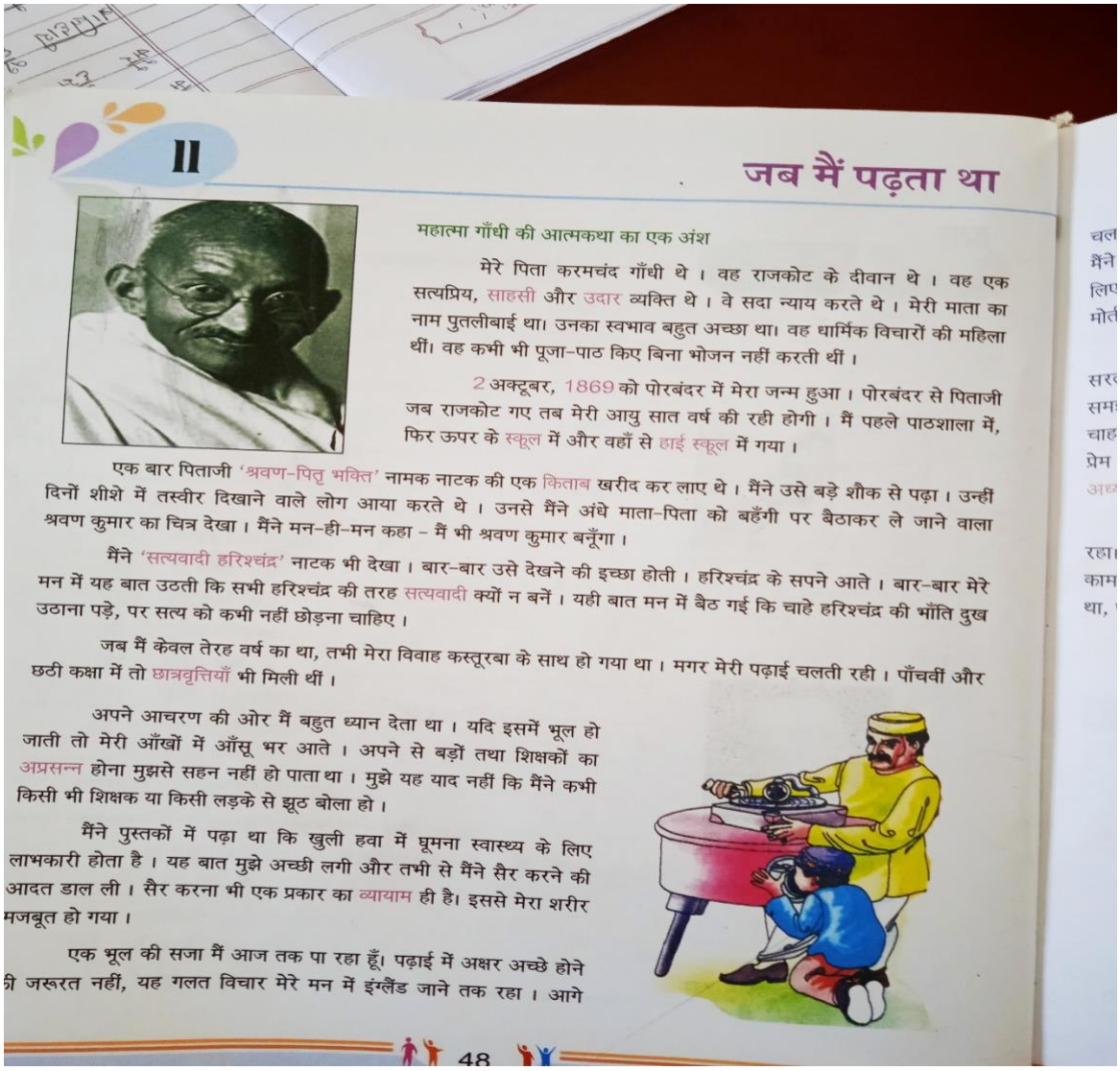

II

जब मैं पढ़ता था

महात्मा गाँधी की आत्मकथा का एक अंश

मेरे पिता करमचंद गाँधी थे । वह राजकोट के दीवान थे । वह एक सत्यप्रिय, साहसी और उदार व्यक्ति थे । वे सदा न्याय करते थे । मेरी माता का नाम पुतलीबाई था। उनका स्वभाव बहुत अच्छा था। वह धार्मिक विचारों की महिला थीं। वह कभी भी पूजा-पाठ किए बिना भोजन नहीं करती थीं ।

2 अक्टूबर, 1869 को पोरबंदर में मेरा जन्म हुआ । पोरबंदर से पिताजी जब राजकोट गए तब मेरी आयु सात वर्ष की रही होगी । मैं पहले पाठशाला में, फिर ऊपर के स्कूल में और वहाँ से हाई स्कूल में गया ।

एक बार पिताजी 'श्रवण-पितृ भक्ति' नामक नाटक की एक किताब खरीद कर लाए थे । मैंने उसे बड़े शौक से पढ़ा । उन्हीं दिनों शीशे में तस्वीर दिखाने वाले लोग आया करते थे । उनसे मैंने अंधे माता-पिता को बहँगी पर बैठाकर ले जाने वाला श्रवण कुमार का चित्र देखा । मैंने मन-ही-मन कहा - मैं भी श्रवण कुमार बनूँगा ।

मैंने 'सत्यवादी हरिश्चंद्र' नाटक भी देखा । बार-बार उसे देखने की इच्छा होती । हरिश्चंद्र के सपने आते । बार-बार मेरे मन में यह बात उठती कि सभी हरिश्चंद्र की तरह सत्यवादी क्यों न बनें । यही बात मन में बैठ गई कि चाहे हरिश्चंद्र की भाँति दुख उठाना पड़े, पर सत्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए ।

जब मैं केवल तेरह वर्ष का था, तभी मेरा विवाह कस्तूरबा के साथ हो गया था । मगर मेरी पढ़ाई चलती रही । पाँचवीं और छठी कक्षा में तो छात्रवृत्तियाँ भी मिली थीं ।

अपने आचरण की ओर मैं बहुत ध्यान देता था । यदि इसमें भूल हो जाती तो मेरी आँखों में आँसू भर आते । अपने से बड़ों तथा शिक्षकों का अप्रसन्न होना मुझसे सहन नहीं हो पाता था । मुझे यह याद नहीं कि मैंने कभी किसी भी शिक्षक या किसी लड़के से झूठ बोला हो ।

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है । यह बात मुझे अच्छी लगी और तभी से मैंने सैर करने की आदत डाल ली । सैर करना भी एक प्रकार का व्यायाम ही है। इससे मेरा शरीर मजबूत हो गया ।

एक भूल की सजा मैं आज तक पा रहा हूँ। पढ़ाई में अक्षर अच्छे होने की जरूरत नहीं, यह गलत विचार मेरे मन में इंग्लैंड जाने तक रहा । आगे

गृहकार्य-

दिए, गए अध्ययन- सामग्री पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा कठिन शब्द चुनकर लिखें।

सुप्रभात बच्चों,